[This question paper contains 2 printed pages.]

(10) **Your Roll No.** 2022

**Sr. No. of Question Paper : 3294** **A**

Unique Paper Code : 12051401

Name of the Paper : Bhartiya Kavyashastra
(भारतीय काव्यशास्त्र)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi (LOCF)**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

**छात्रों के लिए निर्देश**

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

1. भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा का संक्षिप्त परिचय देते हुए आचार्य विश्वनाथ के योगदान पर प्रकाश डालिए ।

**अथवा**

काव्य हेतु से क्या तात्पर्य है ? भारतीय आचार्यों द्वारा प्रस्तुत काव्य हेतुओं पर विचार कीजिए ।

(12)

P.T.O.

2. रस का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

**अथवा**

शब्द शक्ति किसे कहते हैं ? लक्षणा शब्द शक्ति की परिभाषा देते हुए उसके भेदों का उदाहरण सहित निरूपण कीजिए। (12)

3. महाकाव्य **अथवा** खंडकाव्य का तात्विक विवेचन कीजिए।

4. (क) किन्हीं **तीन** अलंकारों के लक्षण - उदाहरण दीजिए - (3×3=9)

अनुप्रास, विभावना, श्लेष, यमक, उत्प्रेक्षा, विरोधाभास

(ख) किन्हीं **तीन** छंदों के लक्षण - उदाहरण दीजिए - (3×3=9)

भुजंगप्रयात, शार्दूलविक्रीड़ित, चौपाई, रोला, दोहा, छप्पय

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (7×3=21)

(क) ओज गुण

(ख) करुण रस

(ग) रूपक और उपमा में अंतर

(घ) मम्मट के अनुसार काव्य लक्षण

(ङ) काव्य दोष के पाँच प्रकार

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

[This question paper contains 6 printed pages.]

(11) Your Roll No. 2022

Sr. No. of Question Paper : 3461 A

Unique Paper Code : 12051402

Name of the Paper : हिन्दी कविता (छायावाद के बाद)

Name of the Course : B.A. (Hons.) Hindi

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

1. सप्रसंग व्याखया कीजिए : (7.5×2=15)

(क) अगर मैं तुमको

ललाती सांझ के नभ की अकेली तारिका

अब नहीं कहता,

या शरद के भोर की नीहार-न्हायी कुँई,

टटकी कली चंपे की,

P.T.O.

वगैरह, तो

नहीं, कारण कि मेरा हृदय उथला या कि सूना है

या कि मेरा प्यार मैला है।

बल्कि केवल यही : ये उपमान मैले हो गए हैं।

देवता इन प्रतीकों के कर गए हैं कूच।

अथवा

क्या अन्तरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें

क्या दीमकों ने खा लिया है

सारी रंग बिरंगी किताबों को

क्या काले पहाड़ के नीचे रब गए हैं सारे खिलौने

क्या किसी भूकंप में ढह गई हैं

सारे मदरसों की इमारतें

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

(ख) आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी,

शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।

हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गाँव में,

हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,

मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,

हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

**अथवा**

एक आदमी

रोटी बेलता है

एक आदमी रोटी खाता है

एक तीसरा आदमी भी है

जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है

वह सिर्फ रोटी से खेलता है

मैं पूछता हूँ--

'यह तीसरा आदमी कौन है?'

मेरे देश की संसद मौन है।'

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

2. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं **दो** का रचना-कौशल की दृष्टि से विश्लेषण कीजिए : (7.5×2=15)

(क) कौन है वह व्यक्ति जिसको चाहिए न समाज?

कौन है वह एक जिसको नहीं पड़ता दूसरे से काज?

चाहिए किसको नहीं सहयोग?

चाहिए किसको नहीं सहवास?

कौन चाहेगा कि उसका शून्य में टकराय यह उच्छ्वास?

हो गया हूँ मैं नहीं पाषाण

जिसको डाल दे कोई कहीं भी

करेगा वह कभी कुछ न विरोध। (मूल–संवेदना)

(ख) जब वह बहुत ज्यादा थक जाती है

तो उठा लेती है सुई और तागा

मैंने देखा है कि जब सब सो जाते हैं

तो सुई चलाने वाले उसके हाथ

देर रात तक

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

समय को धीरे–धीरे सिलते हैं

जैसे वह मेरा फटा हुआ कुर्ता हो

(काव्य–सौंदर्य)

(ग) राष्ट्रगीत में भला कौन वह

भारत-भाग्य-विधाता है

फटा सुथन्ना पहने जिसका

गुन हरचरना गाता है।

मखमल टमटम बल्लम तुरही

पगड़ी छत्र चवंर के साथ

तोप छुड़ाकर ढोल बजाकर

जय-जय कौन कराता है । (काव्य-बिंब)

3. नागार्जुन की काव्यगत विशेषताओं का वर्णन कीजिए। (15)

अथवा

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

अज्ञेय की कविता का मूत्र स्वर स्पष्ट कीजिए।

4. 'रामदास' कविता की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

राजेश जोशी की कविताओं में व्यक्त स्वप्न और यथार्थ का चित्रण कीजिए।

5. भवानी प्रसाद मिश्र की काव्य-भाषा का विश्लेषण कीजिए। (15)

अथवा

केदारनाथ सिंह की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

[This question paper contains 4 printed pages.]

(12) Your Roll No. 2022

Sr. No. of Question Paper : 3499 A

Unique Paper Code : 12051403

Name of the Paper : हिंदी उपन्यास

Name of the Course : **B.A. (H) – Hindi**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

1. प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए :

(क) "हमारे शिक्षालयों में नरमी को घुसने ही नहीं दिया जाता। वहां स्थाई रूप से मार्शल-लॉ का व्यवहार होता है। कचहरी में पैसे का राज है, हमारे स्कूलों में भी पैसे का राज है, उससे कहीं कठोर, कहीं निर्दय देर में आइए तो जुर्माना; ना आइए तो जुर्माना; सबक ना याद हो तो जुर्माना; किताबें न खरीद सकिए

3499

तो जुर्माना; कोई अपराध हो जाए तो जुर्माना; शिक्षालय क्या है, जुर्मानालय है। यही हमारी पश्चिमी शिक्षा का आदर्श है, जिसकी तारीफों के पुल बाँधे जाते हैं। यदि ऐसे शिक्षालयों से पैसे पर जान देनेवाले, पैसे के लिए गरीबों का गला काटने वाले, पैसे के लिए अपनी आत्मा को बेच देनेवाले छात्र निकलते हैं, तो आश्चर्य क्या है ?"

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

अथवा

नौ बजे कथा आरंभ हुई। यह देवी-देवताओं और अवतारों की कथा न थी। ब्रह्म-ऋषियों के तप और तेज का वृतांत न था, क्षत्रियों के शौर्य और दान की गाथा न थी। यह उस पुरुष का पावन चरित्र था जिसके यहां मन और कर्म की शुद्धता ही धर्म का मूल तत्व है। वही ऊंचा है, जिसका मन शुद्ध है; वही नीचा है, जिसका मन अशुद्ध है- जिसने वर्ण का स्वांग रचकर समाज के एक अंग को मदान्ध और दूसरे को म्लेच्छ नहीं बनाया ? किसी के लिए उन्नति या उद्धार का द्वार नहीं बंद किया- एक के माथे पर बड़प्पन का तिलक और दूसरे के माथे पर नीचता का कलंक नहीं लगाया। इस चरित्र में आत्मोनन्नति का एक सजीव संदेश था, जिसे सुनकर दर्शकों को ऐसा प्रतीत होता था, मानो उनकी आत्मा के बंधन खुल गए हैं, संसार पवित्र और सुंदर हो गया है।

(ख) संसार में पाप कुछ भी नहीं है, वह केवल मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता का दूसरा नाग है! प्रत्येक व्यक्ति एक विशेष प्रकार की मनःप्रवृत्ति लेकर उत्पन्न होता है-प्रत्येक व्यक्ति इस संसार के रंगमंच पर एक अभिनय करने आता है। अपनी मनःप्रवृत्ति से प्रेरित होकर अपने पाठ को वह दोहराता है-यही मनुष्य का जीवन है। जो कुछ मनुष्य करता है, वह उसके स्वभाव के अनुकूल होता है और स्वभाव प्राकृतिक है। मनुष्य अपना स्वामी नहीं है, वह परिस्थितियों का दास है- विवश है। कर्ता नहीं है, वह केवल साधन है। फिर पुण्य और पाप कैसा ?

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

अथवा

साथ रहने की यंत्रणा भी बड़ी विकट थी और अलगाव का त्रास भी। अलग रहकर भी वह ठंडा युद्ध कुछ समय तक जारी ही नहीं रहा, बल्कि अनजाने ही अपनी जीत की संभावनाओं को एक नया संबल मिल गया था कि अलग रहकर ही शायद सही तरीके से महसूस होगा कि सामनेवाले को खोकर क्या कुछ अमूल्य खो दिया है। और वकील चाचा की हर खबर, हर बात इन संभावनाओं को बनाती-बिगड़ती रही थी।

सामने वाले को पराजित करने के लिए जैसा सायास और सन्नद्ध जीवन उसे जीना पड़ा उसने उसे खुद ही पराजित कर दिया। सामनेवाला व्यक्ति तो पता नहीं कब परिदृश्य से हट भी गया और वह आज तक उसी मुद्रा में, उसी स्थिति में खड़ी है- सांस रोके, दम साधे, घुटी-घुटी और कृत्रिम!

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** उपन्यासकारों पर टिप्पणी लिखिए :

(क) यशपाल

(ख) श्रीलाल शुक्ल

(ग) मन्नू भंडारी

(घ) मैत्रेयी पुष्पा (7.5×2=5)

3. 'कर्मभूमि' उपन्यास गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित कथाओं का तामा-बाना है। इस कथन के आलोक में अपने विचार व्यक्त कीजिए। (15)

**अथवा**

'कल की सुखदा और आज की सुखदा में कितना अंतर हो गया है। भोग-विलास पर प्राण देने वाली रमणी आज सेवा और दया की मूर्ति बनी हुई है।' इस कथन के आधार पर सुखदा का चरित्रांकन उदाहरण सहित कीजिए।

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

4. 'चित्रलेखा' उपन्यास के कथ्य-शिल्प पर विचार कीजिए। (15)

**अथवा**

'चित्रलेखा' उपन्यास के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

5. 'आपका बंटी' उपन्यास नारी मन की अनेक परतों को खोलता है। स्पष्ट कीजिए। (15)

**अथवा**

'आपका बंटी' उपन्यास की भाषा-शैली पर विचार कीजिए।